

# बीमार को साँत्वना देने की फज़ीलत

मुहम्मद अज़हर मदनी

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक हज़रत सौबान बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: यकीनन मुसलमान जब अपने किसी भाई की इयादत (बीमार होने पर हाल चाल मालूम) करता है तो मरीज़ के पास से वापस आने तक वह जन्नत के ताज़ा फलों को चुनने में व्यस्त रहता है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि ख़िरफतुल जन्नह क्या है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत के ताज़ा फलों को चुनना। (सहीह मुस्लिम)

इस्लाम दया व करुणा का धर्म है और वह इन्सान को सीधे रास्ते पर चलने का आदेश देता है। इस्लाम ने पूरी दुनिया में मानवता के पैगाम को साधारण किया। लोगों को सच्चे मार्ग पर आने के लिये स्पष्ट व्यवस्था दी। मानवता की भलाई और हमदर्दी के लिये सिद्धांत दिए, एक दूसरे के अधिकारों को अदा करने और समझने के लिये शिक्षाएं दीं। इन ही शिक्षाओं और अधिकार में रोगी के अधिकार भी हैं यानी बीमार होने पर मरीज़ का हाल चाल मालूम करना और बीमारी की हालत में उसको साँत्वना देना ताकि मरीज़ को अपनी बीमारी से राहत मिले और उसको यह एहसास हो कि बीमारी की हालत में उसका साथ देने वाले मौजूद हैं। इस हदीस में ख़िरफतुल जन्नह की खुशखबरी ऐसे लोगों के लिये है जो अपने भाई की इयादत करता है, उसके मर्ज के दूर होने के लिये दुआ करता है और परेशानी की हालत में उसको साँत्वना और तसल्ली देता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल को फरमाते हुए सुना कि कोई भी ऐसा मुसलमान नहीं है जो दिन के शुरू में किसी मुसलमान की इयादत करे तो उसके लिये सत्तर हज़ार फरिशते शाम तक रहमत की दुआ करते हैं और अगर वह दिन के आखिरी वक़्त में इयादत करता है तो उसके लिये सत्तर हज़ार फरिशते सुबह तक रहमत की दुआ करते रहते हैं और उसके लिये जन्नत में एक बाग़ निर्धारित है।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिस शख्स ने अच्छी तरह वजू किया और सवाब की निश्चय से अपने मुसलमान भाई की इयादत के लिये गया तो उसे जहन्नम से सत्तर साल की दूरी के बराबर दूर कर दिया जाएगा। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जब कोई शख्स बीमार की इयादत के लिये जाता है तो आसमान से मुनादी (आवाज़ लगाने वाला) एलान करता है कि तू अच्छा है, तेरा चलना अच्छा है और तूने जन्नत की एक मंज़िल को अपना ठिकाना बना लिया।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं: सलाम का जवाब देना, बीमार का हाल चाल मालूम करने जाना, जनाज़े में शरीक होना, दावत कुबूल करना, छींक का जवाब देना।

इस्लाम की इन शिक्षाओं की रोशनी में हमारे लिये यह ज़रूरी हो जाता है कि हम लोग एक दूसरे के दुख दर्द को समझें, बीमार ग़ैर मुस्लिम भाइयों की भी इयादत की जाए और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया, अवसर के अनुसार, इस्लाम की खूबियों को बयान किया जाए। मरीज़ दोस्त हो या दुश्मन, रिश्तेदार हो या ग़ैर रिश्तेदार बिना भेदभाव के उसका हाल चाल मालूम किया जाए, मरीज़ की हालत के अनुसार उसके पास रुका जाए, मरीज़ के ठीक हो जाने के लिये दुआ की जाए, उसको तसल्ली दी जाए और उसके दुख दर्द के दूर करने की कोशिश की जाए और कोई ऐसी बात न की जाए जिससे मरीज़ के दुख के बढ़ने की आशंका हो। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें मरीज़ की इयादत करने की क्षमता दे।

≡ मासिक

# इसलाहे समाज

मार्च 2020 वर्ष 31 अंक 3

शाबानुल मुअज़्ज़म 1441 हिजरी

संरक्षक

असगर अली सलफी

संपादक

एहसानुल् हक़

□	वार्षिक राशि	100 रुपये
□	प्रति कापी	10 रुपये
□	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद  
दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने  
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से  
भारत आफसेट 2035 कासिम जान स्ट्रीट,  
बल्लीमरान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले  
हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद  
दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## इस अंक में

1. बीमार को साँत्वना देने की फज़ीलत	2
2. हसद के नुकसानात और एलाज	4
3. सकारात्मक जवाब देने की ज़रूरत है	6
4. आत्म हत्या समाज का नासूर संगीन जुर्म	7
5. कोरोना वायरस	11
6. मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की करारदाद में आतंकवाद की कड़ी निन्दा	13
7. ज़कात न देने वालों का अंजाम	19
8. प्रेस रिलीज़ (कोरोना वायरस से संबंधित)	21
9. एलाने दाख़िला (अल माहदुल आली)	22
10. रोज़ा और रमज़ान के महीने की श्रेष्ठता	23
11. रोज़े के अहकाम और मसाइल	25
12. प्रेस रिलीज़ (अमन की अपील)	27
13. विज्ञापन	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- [www.ahlehadees.org](http://www.ahlehadees.org)

इसलाहे समाज  
मार्च 2020

3

# हसद के नुकसानात और एलाज

असगर अली इमाम महदी सलफी  
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

हसद की बुनियाद, अहंकार और लाचारी व कमजोरी है। यह दोनों विरोधाभास अवगुण किसी शख्स और जमाअत में जमा हो जाते हैं या इनमें से कोई एक पैदा होता है तो हसद की आग भड़क उठती है फिर हसद करने वाला हसद (डाह) की आग में झुलसने लगता है। हसद इन्सान की सबसे बदतरीन आदत है। हसद की बीमारी तमाम उम्मतों में साधारण रही है और जिन जिन कौमों में इस बीमारी ने जड़ पकड़ ली तो इस बीमारी ने नासूर बन कर उम्मत को हलाक व बर्बाद कर दिया। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: “यह लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन्हें दिया है पस हमने तो आले इब्राहीम को किताब और हिकमत भी दी है और बड़ी सलतनत भी दी है।” (सूरे निसा-५४)

आज भी लोग मालदार से हसद करते हैं, कभी आदमी की सेहत

और तन्दुरुस्ती की वजह से हासिदों की नज़र में आ जाता है और कभी आल औलाद के सिलसिले में, कभी खुशहाली, पद और दीन व ईमान के बारे में भी लोगों के हसद का शिकार हो जाता है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:

“इन अहले किताब के अधिकांश लोग हक के स्पष्ट होने के बावजूद महज़ हसद व बुग़ज़ की बिना पर तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं, तुम भी मआफ करो और छोड़ो यहां तक कि अल्लाह तआला अपना हुक्म लाए, यकीनन अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ) रखता है।” (सूरे बक्रा-१०६)

अगर आप गहराई से चिंतन करेंगे तो अन्दाज़ा होगा कि इस ख़तरनाक और नासूर मर्ज़ के पैदा होने की एक ही जगह है और वह इन्सान का दिल है और यह सर्वमान्य है कि दिल में जितना हसद पैदा होता है उतना ही ईमान दिल से

निकलना शुरू हो जाता है। ईमान और हसद एक दूसरे के बहुत पुराने दुश्मन हैं दिल में जितना ज़्यादा ईमान मजबूत हो गा हसद और डाह से इन्सान उतना ही दूर रहे गा। अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ईमान और हसद किसी एक ही मोमिन के दिल में एकटटा नहीं हो सकते। (नेसई)

हसद एक ऐसी आग है जो इन्सान की तमाम नेकियों को जला डालती है चाहे वह जिस तरह की भी नेकी हो, हसद नेकी को छोड़ता नहीं सफ़ाया कर देता है। अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम से पहले उम्मतों की बीमारी तुम्हारे अन्दर घर कर गई है और वह पुरानी बीमारी हसद और कीना (डाह) है और वही है जो बिल्कुल मूंडनों वाली है। मैं नहीं कहता है कि यह बालों को मूंड देती है बल्कि दीन का सफ़ाचट करके

छोड़ती है।

हसद से बचने का पहला उपाय यह है कि आप जिस नेमत से लाभान्वित हो रहे हैं उसे सब पर जाहिर न होने दें और हासिदों पर जाहिर होने ही न दें जैसा कि यूसुफ अलैहिस्सलाम को अपने भाइयों को खुवाब को न बताने की ताकीद थी। बाज़ रिवायतों में साफ साफ बताया गया है कि अपनी ज़रूरतों और नेमतों को कामयाबी तक पहुंचाने के लिये उन्हें छिपाया करो क्योंकि नेमत वाले के साथ हसद किया जाता है जब देखो कि कोई हासिद है तो अपनी नेमत को गुप्त रखो। इसका मतलब यह भी नहीं है कि हर बात हर आदमी से छिपाते फिरो और यूं निरन्तर वहम, शक और लोगों के साथ बदगुमानी में लिप्त हो जाओ।

दूसरा अहम उपाय यह है कि ज़िक्र व अज़कार, दुआ इस्तेगफार से गाफिल न हो बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र व फिक्र में मशगूल रहें हसद और हसद करने वाले से अल्लाह की पनाह मांगना भी अहमतरिन उपाय में से है और बचाव की ज़रूरी बातों में से अहम

है क्योंकि जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। दुनिया के हर मामले और मुसीबत में वक़्ती और टमपरेरी सबब अल्लाह की तौफीक़ और हुक्म से काम में आ जाते हैं मगर हसद एक ऐसी मनहूस और हानिकारक चीज़ है जिससे अल्लाह न बचाए तो बचना महाल है।

आज हम इस मज़बूत क़िला और महफूज़ पनाहगाह को छोड़ कर न जाने कहां कहां भटक रहे हैं? इस पहलू से यह स्पष्ट कर देना उचित और ज़रूरी मालूम होता है कि एक इन्सान के लिये इन औराद व वज़ाइफ़ (दुआओं) का पढ़ना मतलूब व मकसूद है न कि उन्हें दीवारों की ज़ीनत बनाना, किताबों और तख़्तियों पर तुग़रे की शक़्त में ढाल देना या अपने बच्चों के गलों में और इमारतों के दरवाज़ों पर डाल देना, यह किसी तरह काफी और उनका बदल नहीं हो सकता।

इस सिलसिले में एक तीसरी बात भी अहम है जिसे ध्यान और दिमाग में रखना चाहिए वह यह है कि हसद की जगहों से भी बचना अहम और ज़रूरी है क्योंकि हासिदों

के हसद को टालना बेहद मुश्किल मामला है न इसे ताक़त से रोका जा सकता है न दौलत की इंकार से फेरा जा सकता है, इसको खतम करना इन्सान के बस का रोग है ही नहीं।

एक मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल हुआ कि लोगों में सबसे अफज़ल कौन है आपने फरमाया: कुल्लो मख़मूमिल क़लबी व सुदूकिल लिसानी” लोगों ने कहा कि “सुदूकिल लिसान” “सच्ची जुबान” वाला होने का माना तो मालूम है लेकिन मख़मूमल क़ल्ब” का क्या अर्थ है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो तक्वा, परहेजगारी और दिल की सफ़ाई और अन्दर की सुथराई से भरा पुरा हो, न उसके दिल में गुनाहों के लिये कोई जगह हो, न सरकशी और जुल्म व ज़्यादती की सोचने की गुंजाइश हो, न दिल में किसी तरह का खोट और कीना रखता हो और हसद व बुग़ज़ से जो दिल बिल्कुल साफ हो वही दिल “दिले मख़मूम” है और बस।



## सकारात्मक जवाब देने की ज़रूरत है

नौशाद अहमद

संसार में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिन पर इन्सान अपनी राय को व्यक्त करने पर मजबूर हो जाता है लेकिन किसी भी घटना या फैसले पर हर किसी का अपनी राय देना या उत्तेजित होना मुनासिब नहीं कहा जा सकता, और हालात का तकाज़ा कभी कभार ऐसा होता है कि किसी वाकए के बारे में इन्सान अपनी राय दे देता है लेकिन राय देने से पहले उसके अंजाम पर गौर नहीं करता है जिस की वजह से उसकी राय और अभिव्यक्ति भायदे देने के बजाए नुकसान पहुंचा देती है और महज़ एक व्यक्ति के गलत राय देने से पूरे समुदाय और मानव जगत को उसका नुकसान उठाना पड़ता है, जो किसी हाल में मुनासिब नहीं है। सोशल मीडिया में देखा जा रहा है कि कितने लोग मामले की पूरी जानकारी न होने के बावजूद अपनी राय पेश कर देते हैं जबकि राय उसी को देनी चाहिए जो संबन्धि त मामले के बारे में बड़ी गहराई से

और भर पूर ज्ञान रखता हो, जो यह समझता हो कि हमारी राय देने से या किसी मामले में प्रतिक्रिया व्यक्त करने से क्या प्रभाव पड़ेगा।

मीडिया में ऐसी खबरों की तादाद कम नहीं है जो निराधार होती हैं, पहली नज़र में सहीह लगती है लेकिन बाद में पता चलता है कि फलॉ खबर का हकीकत से कोई संबन्ध नहीं है। आज कल फर्जी वीडियो भी सोशल मीडिया पर बड़े स्तर पर वायरल हो रहा हैं जो किसी की छवि को ख़राब करने का माध्यम बन रहा है और किसी का उससे उसका स्वार्थ पूरा हो रहा है। फेसबुक और व्हाटसेप आज कल सबके स्तेमाल में आ गया है लेकिन जो लोग खबर के नकारात्मक पहलू से अनभिज्ञ होते हैं या अंजान होते हैं वह बिना सोचे समझे उसको फारवर्ड कर देते हैं, हालात और समय के अनुसार खबर संवेदनशील हो जाती है, महज़ एक व्यक्ति की गलती की वजह से खबर के

नकारात्मक पहलू का परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है।

सावधानी की बात यह है कि हर खबर को पूरी तरह से समझने की कोशिश की जाए, किसी खबर से दूसरों तक पहुंचने से क्या प्रभाव पड़ेगा, इसकी तरफ ध्यान देने की ज़रूरत है। यह सोशल मीडिया का वह पहलू है जिससे बचने और सचेत रहने की ज़रूरत है?

सोशल मीडिया का एक वह पहलू है जो चिंताजनक है जिसके द्वारा किसी विशेष समुदाय की छवि को खराब करने और भ्रमित करने का प्रयास किया जाता है, ऐसे किसी भी प्रयास का शिक्षित लोगों को सकारात्मक तरीके से जवाब देने की भी ज़रूरत है। गाली का जवाब गाली से देने की आवश्यकता नहीं है बल्कि कानून और शिष्टाचार का सहारा लिया जाए। किसी भी नकारात्मक बात का जवाब सकारात्मक तरीके से देने से अच्छा प्रभाव पड़ता है।

## आत्म हत्या: समाज का नासूर, संगीन जुर्म

खुशीद आलम मदनी

आज कल आत्महत्या का रुझान आम होता जा रहा है, आए दिन आत्महत्या के वाक्यात घटित हो रहे हैं जिनकी खबरें आप अख़बारात और कई न्यूज़ चैनलों से देखते और सुनते हैं। वैश्विक संस्था डब्लू.एच.ओ की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में हर ४० सेकेण्ड में एक इन्सान आत्महत्या (खुदखुशी, सूसाइड) करके मौत के मुंह में चला जाता है। कौमी तंजीम (दैनिक) के अनुसार हमारे देश में विभिन्न कारणों से क्षात्रों की आत्महत्या के वाक्यात में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है और इस वक़्त हालात यह हैं कि देश में हर घंटे कहीं न कहीं कोई न कोई क्षात्र अपने जीवन का अंत कर लेता है। गृह मंत्रालय ने इस सिलसिले में जो रिपोर्ट पेश की है उसके अनुसार दसवीं से बारहीं के दर्मियान मायूसी, नाकामी या भय से आत्महत्या करने वाले क्षात्रों की तादाद में लगातार

बढ़ोतरी हो रही है। मंत्रालय ने जो रिपोर्ट जारी की है उसके मुताबिक सिर्फ २०१६ ई० में ६४७४ क्षात्रों ने आत्म हत्या की। (कौमी तंजीम दैनिक ८ जनवरी २०१८ ई०)

इसी तरह एन.सी.आर. बी (नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो) की रिपोर्ट के मुताबिक हिन्दुस्तान में ४६ किसान रोज़ाना खुदखुशी करते हैं १६६५ ई० २०१३ ई० तक कुल १८ वर्षों में २६५४३८ किसानों ने खुद कुशी की है।

आत्महत्या स्वयं अपने हाथों अपनी जिन्दगी गवाने की कोशिश का नाम है इसके लिये विभिन्न तरीके स्तेमाल किए जाते हैं।

इसके विभिन्न कारण हैं। इस्लाम दुनिया की पहली जीवन-व्यवस्था है जिस ने आत्महत्या को हराम और आत्म हत्या करने वाले को जहन्नमी करार दिया है। उसकी निगाह में जिन्दगी अल्लाह तआला का खूबसूरत उपहार है,

इस जिन्दगी को अल्लाह की खुशी की प्राप्ति और मर्जी के मुताबिक स्तेमाल किया जाए, कौन इन्सान कब तक जिन्दा रहे गा और कब उसकी मौत होगी, यह अल्लाह ही जानता है जिसने इन्सान को पैदा किया वही इन्सान की जान खतम करने का अधिकार रखता है जिसने जिन्दगी दी वही फैसला करेगा कि जिन्दगी कब वापस की जाएगी, इन्सान को यह फैसला करने का अधिकार नहीं है कि उसे कब तक दुनिया में रहना है और कब यहां से जाना है। इन्सान की जिम्मेदारी यह है कि वह अपनी जिन्दगी की हिफाज़त करे, वह तन्दुरुस्त रहने के लिये उचित दवाओं और उपाय को अपनाये अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो गुनेहगार होगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“अल्लाह के रास्ते में खर्च करो और अपने हाथों से अपनी जान को हिलाकत में न डालो और

एहसान करो अल्लाह तआला एहसान (भलाई) करने वालों को पसन्द करता है।” (सूरे बकरा-१६५)

इस आयत में अल्लाह तआला ने जान को हलाक करने के निषेध के साथ जान की हिफाज़त का दो महत्वपूर्ण उपाय व उपचार भी बताया है और वह है खर्च करना और भलाई करना। यानी जब आप दूसरों पर खर्च करेंगे, भलाई करेंगे तो अल्लाह की मुहब्बत भी हासिल होगी और दुनिया वाले आपके दानवीरता के जजबे से प्रभावित होकर जिन्दगी के सफर में आप को अकेला और असहाय नहीं छोड़ेंगे, वह आप के गमों में शरीक और आप की परेशानियों में साझी बनेंगे, फिर आत्महत्या का कोई वायरस आप के जेहन व दिमाग में पैदा नहीं होगा। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाते हैं “तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी आखों का तुम पर हक़ है।” (बुख़ारी)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह हुक्म स्पष्ट रूप से अपने जिस्म व जान और तमाम अंगों की हिफाज़त और उनके अधि

कारों को अदा करने का उपदेश देता है।

अल्लाह तआला की निगाह में आत्महत्या इतना बड़ा अपराध है कि उसने यहूदियों से वादा लिया था कि वह न तो दूसरों का कत्ल करेंगे न आपस में खून बहाएंगे और न ही खुद को हलाक करेंगे तो वह इन तमाम वादों से पलट गए। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया “फिर तुम अपनी जानों को कत्ल करने लगे” (सूरे बकरा-८५) और आत्महत्या से मना करते हुए फरमाया “और अपने आप को कत्ल न करो, यकीनन अल्लाह तआला तुम पर अत्यंत मेहरबान है और जो शख्स यह नाफरमानियां सरकशी और जुल्म से करेगा तो अन्क़रीब हम उसको आग में डाल देंगे और यह अल्लाह पर आसान है।” (सूरे निसा-२६-३०)

कभी कभार इन्सान हालात के हाथों तंग आकर, जिन्दगी से मायूस और दुखी हो कर, तन्हाई और उदासी से उकता कर आत्महत्या पर आमदा हो जाता है इसका बेहतरीन एलाज अल्लाह ने इस आयत में बयान किया है वह है इन्नल्लाहा

काना बिकुम रहीमा कि वह ऐसे हालात में अल्लाह तआला जो अयंत दयावान और कृपालू है की तरफ लौटे और उससे दया करुणा की भीक मांगे उससे मदद का अनुरोध करो, उसकी रहमत जोश में आएगी और सुनहरे भविष्य का सपना साकार हो जाएगा उस के अनुरोध की कुबूलियत का अल्लाह ने वादा किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: “ मैं हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी वह मुझे पुकारे, कुबूल करता हूं” (सूरे बकरा-१८६)

हज़रत ऐयूब अलैहिस्सलाम ने कई वर्षों तक सख्त बीमारी की जिन्दगी गुज़ार दी लेकिन सब्र और इस विश्वास के साथ रहे कि जिसने बीमारी दी है वही शिफा देगा और इसी सब्र के बदले में शिफा पाई। अल्लाह पर यकीन और भरोसा होना चाहिए कि हमारी समस्याओं और कठिनाइयों को हल कर देना अल्लाह के लिये मुश्किल नहीं है वह ज़रूर हमें इस भंवर से निकालेगा। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: “और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करे गा अल्लाह उसे

काफी होगा” (सूरे तलाक-३)

आज इन्सानियत इस मर्ज में लिप्त है और हजार प्रयासों के बावजूद “मर्ज बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवा की” का मामला नज़र आ रहा है। अगर इन्सान चाहता है कि उसका मर्ज खतम हो, मानवता का संरक्षण हो, वह अपने पांव पर कुलहाड़ी न मारे और अपने हाथों अपनी ज़िन्दगी का चिराग न बुझाए तो उसे इस्लाम के बताए गये उपचार को अपनाना होगा और यहां अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढना होगा इसलिये कि आत्म हत्या के वैश्विक आंकड़े गवाह हैं कि ऐसा मुसलमान जो अपने दीन पर चल रहे हैं जिन के सीने में ईमान का चिराग रोशन है वह आत्महत्या नहीं करते। यह इस हकीकत की तरफ संकेत है कि विश्व स्तर पर आत्महत्या के फैलते नासूर को रोकने का आसान उपाय यह है कि दुनिया इस्लाम की शिक्षाओं को समझने की कोशिश करे और इसे अपने जीवन में व्यवहारिक रूप दे। एक मुसलमान इस लिये इस हराम काम से बचता है कि उसकी अक़ल में यह निहित है कि मुसीबत, मायूसी, नाकामी का समाधान अपनी

ज़िन्दगी से हाथ धो लेना नहीं है बल्कि ऐसे हालात में उस अल्लाह सर्वशक्तिमान की तरफ पलटना चाहिए और उससे ज़िन्दगी की कड़वाहटों को बयान करना चाहिए जो संसार का चलाने वाला है और अपनी हिकमत से इस संसार की व्यवस्था को संभाले हुए है। एक मुसलमान कभी निराश नहीं होता वह हमेशा आशावान रहता है क्यों कि मायूसी नेमतों का इन्कार है वह कभी बेसबरी, झिंझलाहट का प्रदर्शन नहीं करता क्योंकि इस्लाम ने उसे हर हाल में सब्र की शिक्षा दी है इस लिये वह पेश आने वाले हालात और कठिनाइयों में घबराहट और बेचैनी के बजाये हालात का मुकाबला करता है और जो उपाय उसके बस में हों उनको पूरी हिकमत एवं बुद्धिमत्ता से अपनाता है और परिणाम अल्लाह के हवाले कर देता है इससे इन्सान की इच्छाशक्ति मजबूत होती है और आदमी के अन्दर आत्मविश्वास और अल्लाह पर भरोसा पैदा होता है।

इस्लाम पर अमल करने वाले और ईमान रखने वाले को खुदकुशी की ज़रूरत नहीं पड़ती इस लिये कि

आत्महत्या करने वाले आम तौर पर समाज से कटे हुए और तन्हाइयों के मारे होते हैं जबकि मुसलमानों का दीन (धर्म) उसे पांच बार मस्जिद में और जुमा व दोनों ईदों में शहर के तमाम लोगों से मिलने का मौका देता है, जिन में लोगों से उसकी मुलाकातें होती हैं, संबन्ध बनते हैं जिससे उसकी तन्हाई (एकान्त) दूर होता है। इसके अलावा आख़िरत (परलोक) का तसौवुर (संकल्पना) भी आत्महत्या से दूर करने में अहम रोल अदा करता है। दुनिया की छोटी सी ज़िन्दगी के बाद दूसरी शाश्वत (हमेशा बाकी रहने वाली) ज़िन्दगी होगी जहाँ ज़िन्दगी के तमाम कर्मों का हिसाब होगा और इसी के मुताबिक जन्नत व जहन्नम (स्वर्ग व नरक) के फैसले होंगे।

यह इस्लाम की खूबी और विशेषता है कि उसने यतीमों की सरपरस्ती की और उनके पालन पोषण और देख भाल पर जन्नत की खुशखबरी सुनाई ताकि वह सहीह दिशा में अपनी ज़िन्दगी का सफर तै करे। अगर उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाए तो संभव है कि



उनका दामन आंसुओं से भर जाए और वह ज़िन्दगी से निराश व दुखी हो जाएं और डिप्रेसन और अपराधिक मानसिकता का वाहक बन कर खुदकुशी पर आमादा हो जाएं।

इस्लाम ने आत्महत्या के तमाम कारणों पर बंध बांधने के बाद आत्महत्या करने वालों को मरने के बाद मिलने वाली सज़ाओं का भी बयान किया है पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिस शख्स ने अपने आप को पहाड़ से गिरा कर हलाक कर दिया वह जहन्नम की आग में ऊपर से नीचे गिरता रहेगा और हमेशा उसमें रहेगा और जिस ने ज़हर पीकर अपने आप को हलाक किया वह हमेशा जहन्नम की आग में ज़हर पीता रहे गा उसे कभी रिहाई नसीब न होगी और जिसने लोहे के हथियार से स्वयं को क़त्ल किया वह हथियार उसके हाथ में होगा जिस से वह जहन्नम में अपने पेट में भोंकता रहेगा और यह हमेशा के लिये होगा। (बुखारी ५४२२, मुस्लिम १०६)

हमें चाहिए कि हम इस्लामी तालीमात के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारें,

इसलाहे समाज  
मार्च 2020

10

अपनी औलाद की तर्बियत से गाफिल बारे में बताते रहें ताकि समाज इस न रहें, चरित्र को बिगाड़ने वाले लानत से पवित्र रहे और अच्छे सीरियलों और फिल्मों से दूर रहें। समाज का गठन हो सके। ओलमा खुदकुशी के नुकसानात के □ □ □

## मासिक इसलाहे समाज

स्वामित्व का एलान

फार्म न० 4 रूल न० 1

नाम पत्रिका : इसलाहे समाज  
अवधिकता : मासिक  
प्रकाशन स्थान : अहले हदीस मंजिल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6  
मुद्रक व प्रकाशक : मुहम्मद इरफान शाकिर  
राष्ट्रीयता : भारतीय  
पता : सी-125/2 अबुल फज़ल इन्कलेव-2 शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली 25  
सम्पादक : एहसानुल हक  
राष्ट्रीयता : भारतीय  
पता : अहले हदीस मंजिल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6  
स्वामित्व : मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द 4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

मैं मुहम्मद इरफान शाकिर, मुद्रक व प्रकाशक तस्दीक करता हूँ कि उपर्युक्त बातें मेरे ज्ञान के अनुसार सहीह हैं।

हस्ताक्षर

प्रकाशक एवं मुद्रक

मुहम्मद इरफान शाकिर

# कोरोना वायरस

नौशाद अहमद

आज कल कोरोना वायरस ने दुनिया को भयभीत और उलझन में डाल दिया है, यह वायरस इतना खतरनाक है कि इसने दुनिया के वासियों का सुख चैन छीन लिया है, अभी तक जो खबर आई है उसमें बताया गया है कि यह वायरस चमगादड़ से फैला है, कई शहरों में यातायात को सीमित कर दिया गया है, नागरिकों को बहुत कम समय के लिये बाहर निकलने की अनुमति है। इस तरह की पाबन्दी से पता चलता है कि टेकनालोजी का गढ़ माने जाने वाले देश चीन के नागरिकों की जिन्दगी की रफतार थम गई है और कई देशों में सड़कों और बाजारों में सन्नाटा छाया हुआ है और स्थिति बड़ी गंभीर हो गई है। अब दुनिया के दूसरे देशों में भी मरीजों की तादाद बढ़ती जा रही है, उपचार के नये नये तरीके ढूँढे जा रहे हैं, एलाज करने वाले डाक्टर भी वायरस से प्रभावित हो रहे हैं। एक खबर यह भी है कि चीन में कुछ डाक्टरों की वायरस से मौत हो गई है अभी तक इस बीमारी का कोई इलाज तय

नहीं हुआ है दुनिया भर के साइंसदां इसका एलाज खोजने के प्रयास में लगे हुए हैं और कई देशों ने इस वायरस के तोड़ और रिसर्च के लिये भारी भरकम रकम भी ख़ास कर दी है।

इस्लाम ने इस दुनिया के बारे में स्पष्ट तौर पर बताया है कि यह आजमाइश और परीक्षा के लिये है। जो इन्सान इस दुनिया में आया है उसकी परीक्षा हो रही है। इस्लाम में अच्छे कर्म का अंजाम स्वर्ग है और बुरे कर्म का अंजाम नरक है। अर्थात स्वर्ग और नरक इन्सान की कामयाबी और नाकामी का स्तर और कसौटी हैं। जो इन्सान इस दुनिया में अच्छे कर्म करेगा अपने पालनहार के बताए गए सिद्धांतों के अनुसार जीवन गुज़ारेगा वह अल्लाह के नज़दीक कामयाब और पास माना जाएगा ऐसा ही इन्सान मरने के बाद वाली दुनिया में स्वर्ग का पात्र हो गा, इसी को कुरआन ने कामयाबी करार दिया है।

इसी तरह से इस दुनिया में जो इन्सान बुरे कर्म करेगा, अपने

पालनहार के बताए गए रास्तों और सिद्धांतों से दूर भागे गा अपने मन मर्जी से रहेगा, गलत रास्ते पर चलेगा तो उसका अंजाम नरक हो गा, इसी को कुरआन ने नाकामी से परिभाषित किया है।

बीमारी और कोरोना वायरस और इस तरह के अन्य रोग अल्लाह की तरफ से वबा भी हो सकते हैं, अल्लाह तआला अपने बन्दों को तन्दुरुस्ती देकर भी आजमाता है और रोग देकर भी आजमाता है। तन्दुरुस्ती देकर आजमाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला यह देखना चाहता है कि हमने अपने बन्दे को तन्दुरुस्ती जैसी जो नेमत दे रखी है उसका स्तेमाल कहां और किस तरह करता है।

रोग देकर आजमाने का मतलब यह है कि इस संसार का पालनहार अपने बन्दों को इस तरह आजमाता है कि क्या मेरा बन्दा परेशानी की घड़ी में मेरा शुक्रिया अदा कर रहा है या परेशान हो कर मेरी नाशुकरी पर आमादा तो नहीं है?

कोरोना वायरस हम तमाम

इसलाहे समाज  
मार्च 2020

11

इन्सानों के लिये वबा भी हो सकती है, ऐसे में हमारे लिये ज़रूरी है कि साइंटिफिक एलाज के साथ साथ हम अल्लाह के बताए गए तरीके के अनुसार जिन्दगी गुज़ारें, एक इन्सान दूसरे इन्सान का सहारा बने, हमदर्द बने, बुरे कर्मों से तौबा करे, अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करे, और अपने पालनहार के उस मक़सद को पूरा करे जिस के लिये इन्सान इस दुनिया में भेजा गया है। कोरोना जैसे जानलेवा वायरस से बचनेका का यह सबसे कारगर रास्ता है इसके अलावा डाक्टरों ने हाथ को बार बार धोते रहने की सलाह दी है। इस तरह की सलाह इस्लाम ने आज से चौदह सौ साल पहले ही दे रखी है जिस पर बड़ी आसानी से नमाज़ों के ज़रिये भी अमल किया जा सकता है। स्पष्ट रहे कि नमाज़ पढ़ने के लिये इस्लामी शरीअत ने वजू बना कर नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है जो शरीर के मैल कुचैल को दूर करने के साथ साथ इन्सान के अन्दर स्वच्छता की भावना पैदा करता है कुदरत के क़ानून से बगावत का अंजाम अच्छा नहीं होता है। अल्लाह तआला ने एक अन्दाज़े से इस दुनिया को बनाया है और इसका संतुलन बनाए रखने का भी

प्रबन्ध किया है हमें इस प्राकृति संतुलन को बनाए रखना है ताकि प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रह सकें।

दुनिया में कुछ रोग ऐसे हैं जो मानव समाज के लिये यह सन्देश देते हैं कि एक वक्त ऐसा भी आता है कि इन्सान चाहे जितनी तरक्की कर ले वह अल्लाह के सामने और उसकी चुनौतियों के आगे बेबस हो जाता है।

आज विश्व स्तर पर मानव समुदाय की जो स्थिति है, अगर इस पर नज़र डाली जाए तो एहसास होता है कि किस तरह लोग भौतिकवाद की तरफ बढ़ रहे हैं, रिश्तेनाते बिखर रहे हैं, मुहब्बत मेल मिलाप कम हो रहे हैं, विश्वास की कड़ियां कजोर हो रही हैं, दूरियां बढ़ती जा रही हैं यह सब स्वार्थ का परिणाम हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम तमाम इन्सानों को कोरोना जैसे घातक वायरस से सुरक्षित रखे और इन्सानों की भी यह जिम्मेदारी है कि वह इस दुनिया में जब तक जीवित है एक अच्छा इन्सान बन कर रहे, समाज के कमज़ोर लोगों के दुख दर्द को समझे, सत्य को समझने की कोशिश करे, असत्य से दूर रहे, किसी के बहकावे में न

आए, एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी का ख्याल रखे, स्वार्थ के जाल से बाहर निकले, कमजोर लोगों के अधिकार को अदा करें, जो लोग मालदार हैं वह ऐसे मौके पर वायरस से प्रभावित लोगों के परिवार वालों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करें, इस वक्त पूरी दुनिया आजमाइश में घिरी हुई है, व्यापार का भविष्य खतरे में पड़ गया है, ऐसे में सभी इन्सानों के लिये यह ज़रूरी हो जाता है कि सब मिल कर इस वायरस का मुकाबला करें और डाक्टर हज़ारात के निदेशों का पूरी तरह पालन करें। यह वह उपदेश है जो हर धर्म का भाग है इस पर हर इन्सान चलने की कोशिश करे क्यों कि मरने के बाद इन्सान का अच्छा कर्म काम में आता है और वह अपने अच्छे कर्म की वजह से लोगों के लिये यादगार बन जाता है इसके विपरीति कुकर्म अपने बुरे कर्मों की वजह से वक्त की गर्द में खो जाता है। अल्लाह तआला हम तमाम भारतीयों और संसार के सभी इन्सानों को कोरोना वायरस से और अन्य वायरस से भी सुरक्षित रखे और हम लोगों को एक दूसरे का मददगार व हमदर्द बनाए।



# मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की करारदाद में आतंकवाद की कड़ी निन्दा और उत्तेजना से परहेज़ करने का सख्त निर्देश

३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस का आयोजन होगा, तारीखों का एलान बाद में किया जाएगा

## रिपोर्ट: मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, संगठन विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र दिनांक १७ फरवरी २०२० को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में अहले हदीस कन्वेंशन ओखला नई दिल्ली में आयोजित हुआ जिस में पूरे देश से कार्य समिति के प्रतिष्ठित सदस्यगण, सूबाई जमीअत अहले हदीस इकाइयों के जिम्मेदारान और विशेष आमंत्रित सदस्यों ने शिरकत की। सत्र का एजेण्डा यह था।

१. अमीर साहब का संबोधन
२. पिछली कार्रवाई की रिपोर्ट व पुष्टि
३. महा सचिव की रिपोर्ट
४. कोषाध्यक्ष की रिपोर्ट
५. ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस के आयोजन पर

गौर

६. मौजूदा हालात पर एक नज़र

७. जमाअत की आर्थिक स्थिरता पर गौर

८. अन्य मामले सत्र के अध्यक्ष की अनुमति से।

सत्र की शुरुआत तय वक़्त पर दस बजे सुबह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के नायब अमीर हाफिज़ मुहम्मद अब्दुल कैयूम की तिलावत से हुई फिर एजेण्डे के अनुसार कार्रवाई हुई।

सबसे पहले अमीर मोहतरम ने हम्द व सलात के बाद तमाम प्रतिष्ठित कार्य समिति के सदस्यगण, सूबाई जमीअत के जिम्मेदारान और विशेष आमंत्रित सदस्यों का गरमजोशी से स्वागत किया और तमाम दीनी दावती व्यस्तताओं के बावजूद मीटिंग में शिरकत के लिये उनका धन्यवाद

किया और अपने व्यापक संबोधन में कुरआन और हदीस का अनुसरण, दावत व मार्गदर्शन, शिक्षा एवं प्राशिक्षण, संयम एवं पवित्रता, एकता, सौहार्द, सदभावना भाईचारा, सांप्रदायिक सदभाव, इन्सान दोस्ती और इस्लाम की बहुमूल्य शिक्षाओं से देशबन्दधुओं को अवगत कराने की ज़रूरत पर खास तौर से ज़ोर दिया और हर प्रकार के आतंकवाद, अशान्ति और घृणा की कड़े शब्दों में निन्दा की और पूरी ईमानी कुव्वत, सब्र व संयम, हिम्मत व हिकमत और सुलह व शान्ति से मिल जुल कर रहने और भली उम्मत का कर्तव्य अदा करते रहने का उपदेश दिया।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने इस सत्र में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

की कारकरदगी रिपोर्ट पेश की जिसकी हाजिरीन ने पुष्टि की और कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ ने हिसाबात पेश किए जिस पर हाउस ने सन्तुष्टि और विश्वास का इज़हार किया। मीटिंग में जमीअत के कामों का जायज़ा लिया गया और भविष्य में दावती तालीमी, संगठनात्मक, निर्माण कार्य और कल्याणकारी प्रोजेक्टों और मानवीय सेवाओं को रफ्तार देने पर गौर किया गया। इसके अलावा जमीअत की माली स्थिरता खास तौर से अहले हदीस मंज़िल के निर्माण कार्यों को पूरा करने और अहले हदीस कम्प्लैक्स में निर्माणाधीन बहुउद्देशीय बिल्डिंग के लिये देश व्यापी स्तर पर अहले खैर हज़रात से ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग करने की अपील की गई। इस मीटिंग में ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस से मुताल्लिक भी चर्चा हुई और फिलहाल कुछ कारणों से बाद में तारीखों के एलान का फैसला किया गया। इसके अलावा देश व समुदाय और वैश्विक समस्याओं से संबन्धित करारदादें और प्रस्ताव भी पारित किये गये।

कार्य समिति की करारदाद में इस्लाम की मानवतावादी शिक्षाओं को बड़े स्तर पर प्रचार व प्रसार

करने, मिल्ली और जमाअती संगठनों के प्रमुखों और ओलमा व अवाम को एक दूसरे पर आरोप लगाने और हसद से बचने का उपदेश दिया गया और ग़रीबी, बेरोज़गारी, मंहगाई और अशिक्षा को देश की अहम समस्याएं करार देते हुए इन को दूर करने के लिये प्रभावी कदम उठाने की अपील की गई है। करारदाद में राष्ट्रीय सदभावना, भाईचारा, हमदर्दी और आपसी मिलनसारी को मौजूदा हालात के दृष्टिगत बढ़ावा देने और देश की इस पहचान को ख़तम करने वाले तत्वों के हतोत्साहन की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया और इस सिलसिले में मीडिया से अपनी जिम्मेदारी निभाने की अपील की गई है।

इसके अतिरिक्त देश की गिरती अर्थव्यवस्था पर ध्यान देने, महिलाओं के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने, दहेज का विरोध करने के साथ, शराबनोशी जैसी अन्य समाजी बुराइयों पर चिन्ता व्यक्त की गई। कार्य समिति की करारदाद में कहा गया है कि संविधान के खिलाफ और पक्षपात पर आधारित कानून सी.ए.ए, और एन. आर सी और एन पी आर के हवाले से जो शान्तिपूर्ण प्रयास हो रहा है वह देश वासियों का संवैधानिक अधिकार है उनके खिलाफ

ताक़्त का इस्तेमाल संविधान के खिलाफ और लोकतंत्र को कमज़ोर करने के समान है। इसी तरह भड़काऊ और उत्तेजित करने वाले बयान चाहे किसी की तरफ से भी हों इस पर नापसन्दीदगी और नागवारी व्यक्त की गयी।

कार्य समिति की करारदाद में चुनाव में जीत पर आम आदमी पार्टी के जिम्मेदारान और दिल्ली की जनता को मुबारकबाद और चुनाव के दौरान नफरत फैलाने वाले बयान पर केन्द्रीय गृहमंत्री के खेद व्यक्त करने का स्वागत किया गया। इसके अलावा सियासी जमाअतों से चुनाव में राष्ट्रीय व समाजी समस्याओं को मुददा बनाने की अपील की गई है।

कार्य समिति की करारदाद में आतंकवाद की सख्त निन्दा करते हुए कहा गया है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता इसलिये इसको किसी खास धर्म और समुदाय की तरफ संबद्ध करना दुरुस्त नहीं है, इसी तरह से पर्यावरण के संरक्षण पर जोर दिया गया और कोरोना वायरस के प्रभावितों से हमदर्दी और मरने वालों के परिवार वालों से शोक व्यक्त किया गया है।

करारदाद में विशेष रूप से इस्लाम जगत की आपसी रस्सा कशी

(खींचा तानी, मतभेद) पर चिंता व्यक्त की गई और इसे पूरी उम्मत के लिये हानिकारक करार दिया गया और फलस्तीन में इस्त्राईल के अत्याचार व बर्बरियत की निन्दा की गई है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति की करारदाद में उन लोगों से होशियार रहने की अपील की गई है जो न्यूज पोर्टल और सोशल मीडिया पर जमाअत के जिम्मेदारान खास तौर से अमीरे मोहतरम के खिलाफ झूठे और फर्ज़ी सामाग्री प्रकाशित कर रहे हैं, फेक खबरों को बयान कर रहे हैं और फोटो शाप की मदद से तसवीरों में अपराधिक कांट छंट करके वायरल कर रहे हैं। कार्य समिति ने ऐसे तत्वों की कड़ी निन्दा की और जिम्मेदारान को पाबन्द बनाया गया कि वह जमाअत व जमीअत और जिम्मेदारान के खिलाफ इस तरह की रेशादवानियों में लिप्त तत्वों के सिलसिले में अपासी मश्वरे से कार्रवाई करें। इसी तरह से जमाअती व समुदायिक मार्गदर्शकों के इन्तेक़ाल पर उनके पसमांदगान से शोक व्यक्त किया गया है।

### करारदाद का मूल लेख:

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र

इस्लामी शिक्षाओं विशेष रूप से अकीदए तौहीद को समस्त मानव जगत तक पहुंचाने की ज़रूरत पर जोर देता है। आज मुलकी और विश्व स्तर पर इस्लामी तालीमात के बारे में जो गलत रूझहानात पाए जाते हैं उनके निवारण के लिये मुसलमानों को भरपूर कोशिश करनी चाहिए। विश्व स्तर पर गुमराहकुन अफवाहों और प्रोपैगण्डों के परिप्रेक्ष्य में यह सन्देश पहुंचाने की ज़रूरत है कि इस्लामी शिक्षाएं और आस्था समस्त मानव जगत के लिये सफलता की जामिन (गारन्टी) है और मानवता इसकी ज़रूरत मन्द है। इसलिये मौजूदा परिस्थिति में इस्लाम की शिक्षाओं को ज़्यादा से ज़्यादा साधारण किया जाए।

कार्य समिति का यह सत्र मिल्ली संगठनों और जमाअतों के प्रमुखों से अपील करता है कि वह मिल्ली एकता का सुबूत दें और एक दूसरे के खिलाफ बयान बाज़ी से पूर्ण रूप से परहेज़ करें क्योंकि यह किसी भी तरह कौम व मिल्लत के हित में नहीं है निराधार बयानात और एक दूसरे पर आरोप से मिल्ली एकता छिन्न बिन हो जाता है और कौम को इसके संगीन परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। मौजूदा हालात में खास तौर पर इससे सभी को होशियार

और चौकन्ना रहने की सख्त ज़रूरत है।

कार्य समिति का यह सत्र महसूस करता है कि गरीबी, बेरोज़गारी, मंहगाई, काला बाज़ारी और असाक्षरता इस देश की ज्वलंत समस्याएं हैं इनका समाधान किए बगैर देश के विकास का तसौउर संभव ही नहीं। यह सत्र सरकारों के अलावा तमाम राजनीतिक व समाजी संगठनों से अपील भी करता है कि वह अपनी अपनी सतह पर इन समस्याओं के समाधान के लिये प्रभावी भूमिका अदा करें। इसके अतिरिक्त राजनीतिक पार्टियों से भी अनुरोध है कि वह इन समस्याओं को चुनावी मुददा बनाएं और धर्म या जाति पात को चुनाव का मुददा बनाने से परहेज़ करें क्योंकि यह किसी भी तरह देश के हित में नहीं है।

कार्य समिति के इस सत्र का एहसास है कि राष्ट्रीय सदभावना, भाईचारा, हमदर्दी और आपसी मिलनसारी पूरी दुनिया में इस देश की पहचान है। देश के निर्माण व विकास में आपसी सहयोग और राष्ट्रीय सदभावना ने महत्वपूर्ण रोल अदा किया है लेकिन यह बहुत अफसोसनाक बात है कि कुछ स्वार्थी लोग हमारी प्राचीन एवं परंपरागत

पहचान को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में देश बन्धुओं के अलावा राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक व प्रिन्ट मीडिया की खास जिम्मेदारी है कि वह ऐसे लोगों का हतोत्साहन करें जो नकारात्मक राजनीति की बुनियाद पर घृणा फैला रहे हैं।

कार्य समिति का यह सत्र देश की गिरती अर्थ व्यवस्था और बढ़ती हुई बेरोज़गारी को चिन्ता की निगाह से देखता है और शासकों से अपील करता है कि वह इस तरफ विशेष ध्यान दें और ऐसे इकदम से परहेज़ करें जो देश में और ज़्यादा अधिक संकट और उलझन का कारण बनें।

कार्य समिति का यह सत्र महिलाओं के शोषण और उनको प्रताड़ित करने की विभिन्न सूरतों, जहेज, वरासत से महरूमी, भ्रूण हत्या, शराब नोशी और दूसरी समाजी बुराइयों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए अवाम व ख़वास से अपील करता है कि वह महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाएं ताकि दुनिया का प्राकृतिक संतुलन बाकी रहे इसके अलावा शराब और अन्य मादक पदार्थों पर हुकूमत पाबन्दी लगाए।

कार्य समिति का यह सत्र धर्म

के आधार पर नागरिकता देने को चिन्ता की दृष्टि से देखता है। इसके अलावा एन.आर.सी और एन.पी.आर की जो बातें हो रही हैं वह किसी भी तरह देश और इसके वासियों के हक़ में नहीं हैं बल्कि मौलिक नागरिक अधिकार से टकराता है और देश के सभी वासियों विशेष रूप से मुसलमानों और पिछड़े वर्गों को मानसिक उलझन में लिप्त करने का सबब बन रही हैं।

कार्य समिति का यह सत्र देश के विभिन्न भागों में सी.ए.ए., एन आर सी, और एन पीर आर के हवाले से जो शान्तिपूर्ण प्रयास और मांगें हो रही हैं वह देश वासियों का संवैधानिक हक़ है, उनके खिलाफ ताक़त का स्तेमाल न केवल संविधान के खिलाफ है बल्कि देश के लोकतंत्र को कमज़ोर करने के समान है इन प्रदर्शनों के दौरान जिन लोगों को अन्यायिक तरीक़े से जेलों में डाल दिया गया है उनको रिहा किया जाए और मरने वालों के पसमांदगान की सहायता की जाए।

कार्य समिति का यह सत्र दिल्ली विधान सभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की जबरदस्त जीत पर पार्टी के संयोजक श्री अरविन्द केजरीवाल और अन्य नेताओं और दिल्ली की जनता

को दिल की गहराइयों से मुबारकबाद पेश करता है और विकास के नाम पर वोट देने के अवामी रूझान को देश की सियासत में मील का पत्थर और कौम व मुल्क के लिये अत्यंत खुश आइन्द (सुगम) करार देता है। साथ ही उम्मीद करता है कि देश के अवाम भविष्य में सभी चुनावों में विकास और काम के नाम पर वोट के रूझान को महत्व देंगे और नफरत व बांटने की सियासत के झांसे में कदापि नहीं आएंगे।

कार्य समिति का यह सत्र देश के गृह मंत्री श्री अमितशाह के उस बयान का स्वागत करता है कि दिल्ली चुनाव में बीजेपी की पराजय की वजह नफरत व बांटने की राजनीति हो सकती है और उन्हें इस पर अफसोस है। साथ ही तमाम राजनीतिक पार्टियों से अपील करता है कि वह मतदाताओं से विकास व भाई चारा और अन्य राष्ट्रीय समस्याओं पर वोट मांगें क्यों कि एक लोकतांत्रिक देश में नफरत और विभाजन कारी राजनीति की कोई जगह नहीं। यह प्रवृत्ति भविष्य में कौम व मुल्क के लिये अत्यंत खतरनाक साबित हो सकती है जिससे बचना ज़रूरी है।

कार्य समिति के इस सत्र का

इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि मीडिया लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तंभ है जिस को अपनी ज़िम्मेदारी निष्ठापूर्वक तरीके से अदा करनी चाहिए। उसकी पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग और टी.आर. पी बढ़ाने के लिये अनुचित मुद्दों को हवा देना और कौम व मुल्क की ज्वलंत समस्याओं की अनदेखी करना बहुत ही हानिकारक साबित हो रहा है यह रवैया कदापि कौम व मुल्क के हित में नहीं है ऐसे में देश के गंभीर व न्याय पसन्द वर्ग की ज़िम्मेदारी है कि वह इसकी संगीनी को महसूस करे और इस सिलसिले में अपना प्रभावी रोल अदा करे।

कार्य समिति का यह सत्र बाज़ उन लोगों की रेशादवानियों और साजिशी आमाल व मानसिकता को चिन्ता की निगाह से देखता है जो कठिन आजमाइश की घड़ी में भी देश व मिल्लत, जमाअत और सरकार व अवाम को गुमराह करने के लिये जमीअत व जमाअत और जमीअत के पदाधिकारियों खास तौर से अमीर मोहतरम के खिलाफ न्यूज़ पोर्टल और सोशल मीडिया में झूठी और मनगढ़त सामाग्री प्रकाशित कर रहे हैं, फेक खबरों को बयान कर रहे हैं और फोटो शाप की मदद से तसवीरों

और बातों में अपराधिक कांट छांट करके वायरल कर रहे हैं। कार्य समिति ऐसे लोगों की कड़े शब्दों में निन्दा करती है उनके झूठे आरोपों, मनगढ़त बातों और गलत प्रोपैगण्डों का खण्डन करती है और अपील करती है कि इन देश व मिल्लत और जमाअत दुश्मन तत्वों से होशियार रहें।

कार्य समिति का यह सत्र देश और दुनिया के दूसरे हिस्सों में होने वाले आतंकी हमलों की कड़े शब्दों में निन्दा करता है। कार्य समिति का यह मानना है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता इस लिये इसे किसी भी धर्म या समुदाय की तरफ संबद्ध करना दुरूस्त नहीं है इसको इस्लाम की तरफ संबद्ध करना कितना आश्चर्यजनक है जिसकी रूह ही अमन व शान्ति है।

कार्य समिति का यह सत्र पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति जो पूरी मानवता के लिये संगीन खतरा बनी हुई है इस पर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए पर्यावरण के संरक्षण के लिये हर शख्स को अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करने का उपदेश देता है और अपील करता है कि हर शख्स न सिर्फ खुद इसमें अपना सकारात्मक भूमिका अदा करे बल्कि

दूसरों को भी इस की संगीनी से आगह करे ताकि दुनिया का पर्यावरण संतुलन बरकरार रहे और पूरी मानवता प्रदूषण जैसी संगीन समस्याओं से छुटकारा पा सके।

कार्यसमिति का यह सत्र चीन में फैल रहे कोरोना वायरस जिससे अब तक हजारों लोग शिकार हो चुके हैं और अन्य हजारों इस से प्रभावित हैं, को अल्लाह का अज़ाब मानते हुए बन्दों को अल्लाह की तरफ रूजू करने और अपने गुनाहों से तौबा करने की तलकीन करता है और पूरी दुनिया से इस मुसीबत की घड़ी में वहां के वासियों की मदद और हमदर्दी के इजहार की अपील करता है।

कार्य समिति का यह सत्र अरब देश की आपसी रस्सा कशी (मतभेद) और खून खराबे को चिन्ता की निगाह से देखता है और महसूस करता है कि उनकी आपसी नाचाकी न सिर्फ उन्हें कमजोर कर रही है बल्कि वैश्विक ताकतों को भी अपने अपवित्र एरादों में कामयाबी से हमकनार कर रही है इसी तरह से जो प्राकृतिक संसाधन मानव सेवा के लिये स्तेमाल किए जाने चाहिए थे उन्हें अवसरवादी जालिमों व अत्याचारियों को लूटना का अवसर प्रदान किया जा रहा है



इस लिये उन्हें चाहिए कि अल्लाह ने उन्हें जो नेमतें दी हैं उसका हक अदा करें और अकारण जंग व लड़ाई झगड़ा से परहेज़ करें।

कार्य समिति का यह सत्र फिलिस्तीन के निहत्थे अवाम पर इस्राईल की जुल्म व बरबरियत की निन्दा करता है और संयुक्त राष्ट्र संघ से अपील करता है कि वह फलस्तीनियों की समस्याओं को हल करने में अपनी जिम्मेदारी निभाए ताकि उस पर दुनिया का विश्वास बाकी रहे और उसकी स्थापना का जो मकसद है जमीनी स्तर पर भी नज़र आए। साथ ही बड़ी ताकतों की जानिब से इस्राईल का अनुचित समर्थन और प्रताड़ित फलस्तीनियों पर अत्याचार से उपेक्षा मानवता के विपरीत करार देता है।

कार्य समिति का यह सत्र मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सलाहकार समिति के सदस्य मौलाना कलीमुल्लाह सलफी जौनपुर के बड़े भाई जनाब अताउल्लाह साहब, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य अलहाज अब्दुरशीद मालियर कोटला पंजाब, जामा मस्जिद दिल्ली की प्रतिष्ठित शख्सियत वाहिद हुसैन कुरैशी पूर्व डी.एस. ओ बिजली विभाग

दिल्ली सरकार, मदर्सा रियाजुल उलूम के पूर्व अध्यापक मौलाना मकसूदुर्रहमान रियाज़ी, सूबाई जमीअत अहले हदीस गुजरात के पूर्व सचिव मौलाना मुहम्मद शुएब मैमन जूनागढ़ी की मां, मर्कज़ी जमीअत अहले हिदीस हिन्द की सलाहकार समिति के सदस्य हकीम मुहम्मद इरफान साहब, भदोही की प्रतिष्ठित शख्सियत और प्रसिद्ध कवि अलहाज शराफत हुसैन वजीरी, प्रसिद्ध अध्यापक व प्रशिक्षक मौलाना अब्दुरक़ीब असरी मरहूम की बीवी और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्ता मौलाना मुहम्मद अहमद सलफी की मां, पंजाब के प्रसिद्ध अलिमे दीन मौलाना अब्दुरऊफ के लड़के और प्रसिद्ध उद्योगपति जनाब मुहम्मद उवैस के मंझले भाई जनाब मुहम्मद जैद, जामिया इस्लामिया फैज़े आम मऊ यूपी के पूर्व सचिव अलहाज निसार अहमद कोटा, सन्त कीबर नगर के प्रसिद्ध शिक्षक व प्रशिक्षक जनाब मास्टर कलीमुल्लाह साहब, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ के बड़े बहनोई जनाब इब्राहीम साहब, वरिष्ठ अलिमे दीन अब्दुल अजीज़ मदनी तैयबी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस

हिन्द के कार्यकर्ता मौलाना मुहम्मद रईस फैज़ी के चचा शौकत अली साहब, मर्कज़ी अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्ता अबुल खैर के पिता जनाब मुहम्मद इब्राहीम अंसारी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व अमीर मौलाना मुख्तार अहमद नदवी रह० की बीवी, जामिया इबने तैमिया बिहार और जामिया रियाजुल उलूम दिल्ली के पूर्व शैखुल हदीस सीनियर अध्यापक मौलाना अमानुल्लाह फैज़ी रह० की बीवी, जिलई जमीअत अहले हदीस छपरा बिहार के नायब अमीर जनाब कमरुददीन, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के नायब नाज़िम मौलाना रियाज़ अहमद सलफी के मामू इंजीनियर मनसूर अहमद खान, अमीर जिलई जमीअत अहले हदीस बहराइच यूपी. आसाम के बुजुर्ग आलिमे दीन मौलाना जमालुददीन सलफी वगैरह के इन्तेकाल पर गहरे रंज व ग़म का इज़हार करता है और दुआ करता है कि अल्लाह तआला उनकी मर्ग़िरत फरमाए, जन्नतुल फिरदौस में जगह दे उनकी खिदमात को कुबूल फरमाए। पसमांदगान को सबरे जमील दे और जमीअत व जमाअत को उनका अच्छा विकल्प दे। आमीन

## ज़कात न देने वालों का अंजाम

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“जिन्हें अल्लाह ने अपने फज़ल से कुछ दे रखा है वह इस में कन्ज़ूसी को अपने लिये बेहतर ख्याल न करें बल्कि वह उनके लिये अत्यन्त बदतर है, अन्क़रीब क़यामत वाले दिन यह अपनी कनज़ूसी की चीज़ के तौक़ डाले जाएं गे” (सूरे आले इमरान-9८०)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: “और जो लोग सोने चांदी का ख़ज़ाना रखते हैं और अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़बर पहुंचा दीजिए, जिस दिन इस ख़ज़ाने को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा फिर इससे उनकी पेशानियां और पहलू और पीठें दागी जाएंगी (उनसे कहा जाएगा) यह है जिसे तुम ने अपने लिये ख़ज़ाना बना कर रखा था, पस अपने ख़ज़ाने का मज़ा चखो।” (सूरे तौबा, ३४-३५)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: “जिसे अल्लाह ने माल

दिया लेकिन उसने ज़कात नहीं दी तो क़यामत के दिन उसका माल जहरीले गंजे सांप की शकल धारण करेगा जिसकी आखों पर दो काले बिन्दु होंगे और वह इसके गले का हार होगा वह इसके दोनों जबड़ों को पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं”। (बुखारी-9४०३)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: “जिस शख्स के पास भी सोना चांदी है और वह ज़कात अदा नहीं करता तो क़यामत के दिन उसके लिये सोना चांदी के पतरे आग से बनाए जायेंगे, जहन्नम की आग में उनको गरम किया जाएगा फिर इन पतरों से उसके पहलुओं, उसकी पेशानी और उसकी कमर को दागा जाएगा। पचास हज़ार साल के दिन में बन्दों में फैसले होने तक जब भी इन पतरों को (उसके बदन से) जहन्नम की जानिब फेरा जाएगा उसको उस (के जिस्म) की तरफ (निरन्तरता के साथ) लौटाने का अमल जारी रहे गा।

आप से पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल ऊंटों के बारे में क्या (हुक़म) है? पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो ऊंटों वाला ऊंटों की ज़कात अदा नहीं करता जबकि ऊंटों के बारे में यह हक़ भी (मुस्तहब) है कि जिस दिन उनको पानी पिलाने के लिये ले जाये उनका दूध दुह कर (गरीबों और मिस्कीनों) में तक़सीम किया जाए तो जब क़यामत का दिन होगा तो ज़कात न देने वाले ऊंटों के मालिक को (चेहरे के बल) ऊंटों के पामाल यानी रौंदने के लिये चटियल मैदान में गिरा दिया जाए गा ऊंट पहले से ज़्यादा मोटे ताज़े और बड़ी मात्रा में होंगे उन में से कोई बच्चा भी गायब नहीं होगा फिर ऊंट अपने मालिक को अपने पावों से रौंदेंगे और अपने दांतों से काटेंगे जब इस पर से पहला दस्ता गुज़र जाएगा। तो फिर इस पर से दूसरा दस्ता गुज़रे गा (यह काम उस रोज़ तक क़ाइम रहेगा) जिस की मुददत हज़ार साल के बराबर है यहां तक कि बन्दों के बीच फैसला हो जाएगा और हर शख्स अपने मक़ाम को देखेगा कि जन्नत में है या जहन्नम

में है।

पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल! गाय और बकरियों के बारे में क्या (हुक्म) है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: गाय और बकरियों का जो मालिक भी इन की ज़कात अदा नहीं करता तो क्यामत के दिन उसको उनके लिये चटियल बड़े मैदान में (मुंह के बल) गिराया जाएगा। जानवरों में से कोई जानवर गायब नहीं होगा उनमें खमदार सींगों वाला, बगैर सींगों वाला और टूटे हुए सींगों वाला कोई जानवर नहीं होगा। जानवर उसको सींग मारेंगे और खुरों के साथ उसे रौंदेंगे जब उस पर पहला दस्ता गुज़ार जाए गा तो उस पर आखिरी दस्ता (उस रोज़ तक लगातार) गुज़रता रहेगा जिस की मुददत पचास हज़ार साल है यहां तक कि इन्सानों के दर्मियान फैसला हो जाएगा। तो हर शख्स अपना ठिकाना देख लेगा कि जन्नत में है जा जहन्नम में है। (मुस्लिम, हदीस का आंशिक भाग-६७८ अबू दाऊद १६५८, मुसनद अहमद १६२/२ मुसनद अब्दुर्रज़ाक ६८५८, इब्ने खुज़ैमा, २२५२, इब्ने हिब्बान ३२/३, बैहकी १८१४)

**ज़कात के फर्ज़ होने की हिकमत**

१. ताकि माल पवित्र और बाबरकत हो जाए।

२. फकीरों और मिस्कीनों की मदद व सहयोग हो जाए।

३. इन्सान का मन बखीली व कंजूसी जैसी बुरी आदतों और गुनाहों से पवित्र हो जाए।

४. माल की नेमत की वजह से इन्सान पर जो अल्लाह का शुक्र लाज़िम आता है वह अदा हो जाए। (अल फिकहुल इस्लाम व अदिल्लतुहू ३/१७६०)

जैसा कि पवित्र कुरआन की इन दलीलों से पता चलता है।

१. “और ज़कात अदा करो” (सूरे बकरा-४३)

२. “उनके मालों से आप सदका लीजिए” (सूरे तौबा १०३१)

३. “उस के कटाई के दिन उसका हक अदा करो” यानी फल उतारने या फसलों की कटाई के वक़्त सूरे तौबा-१४१

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को यमन की तरफ भेजते वक़्त फरमाया कि उन्हें जाकर खबर दो कि बेशक अल्लाह ने उन पर उनके मालों में सदका (यानी ज़कात) को फर्ज़ करार दिया है।” (बुखारी-१३६५, मुस्लिम १६, अबू

दाऊद १५४८ तिर्मिज़ी २६१, नेसई २/५, इब्ने माजा १८७३ मुसनद अहमद २३३/१)

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो को ज़कात के फर्ज़ होने से संबन्धित यह लेख भेजा “यह ज़कात का वह फरीज़ा है जिसे अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों पर फर्ज़ किया है और अल्लाह तआला ने जिस को अल्लाह के रसूल को हुक्म दिया है” (बुखारी, १४५४ अबू दाऊद १५६७, नेसई २४४७)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: पांच चीज़ों पर इस्लाम की बुनियाद रखी गई है उनमें से एक ज़कात अदा करना भी है। (बुखारी-८)

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैंने इन मामलों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बैअत की कि नमाज़ काइम करूंगा, ज़कात अदा करूंगा और हर मुसलमान की खैर खुवाही करूंगा। (बुखारी १४०१)

ज़कात के वाजिब होने पर हमेशा से मुसलमानों का इजमअ (सर्वसम्मत) रहा है।

“फिकहुल हदीस” भाग १ से पृष्ठ ६६६-६६८

(प्रेस रिलीज़)

## कोरोना वायरस के दृष्टिगत सऊदी अरब का फैसला प्रशंसनीय और हकीमाना है: असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली २८ फरवरी २०२०  
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस से जारी एक अखबारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कोरोना वायरस के फैलाव की आशंका के दृष्टिगत और विश्व स्वास्थ्य संस्था के दिशा निर्देशों और स्थापित स्तरों के तहत सऊदी अरब के ज़रिए उमरा ज़ायरीन और सैलानियों के सऊदी अरब में दाखिले पर लगाई गई अस्थाई पाबन्दी का स्वागत किया है और इसे सऊदी अरब का वक़्त पर लिया गया प्रशंसनीय फैसला करार दिया है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि कोरोना वायरस ने आज की विकसित दुनिया को हिलाकर रख दिया है इसके जरासीम के फैलाव की वजह से हर देश और व्यक्ति चिंतित है और हर देश में इससे सुरक्षा व

बचाव और इसकी रोकथाम के विभिन्न उपाय हो रहे हैं। सऊदी अरब ने भी अपने नागरिकों खास तौर से पूरी दुनिया से आने वाले हाजियों, उमरा करने वालों और ज़ायरीन के संरक्षण व बचाव के लिये बरवक़्त हकीमाना (तर्कसंगत) क़दम उठाया है और सावधानीपूर्वक उपाय किया है और उसका यह तरीका भी रहा है कि वह अपने सामर्थ और संभावना की हद तक उनकी राहत व आराम और स्वास्थ्य के लिये प्रयास करती है। इस वक़्त दुनिया के विभिन्न देश खास तौर से चीन जो इस वबा के पैदा होने की पहली जगह साबित हुई है, यह वबा अन्य देशों में न फैले इसका उपाय करने में प्रयासरत हैं जिस की शरीअत में मज़बूत बुनियाद है। अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब किसी देश में ताऊन

फैलने की ख़बर सुनो तो तुम वहां मत जाओ और न ताऊन ग्रस्त देश से जान बचाने के लिये भागे (कहीं तुम इस बीमारी के जरासीम को अपने साथ लेजा कर दूसरी जगहों तक न फैला दो) बुख़ारी

सम्माननीय अमीर ने इस अवसर पर दुनिया के मुसलमानों खास तौर से जरासीम ग्रस्त देशों से आने वाले लोगों से अपील की है कि कुछ दिनों तक सब्र से काम लें। सऊदी अरब के फैसले का सम्मान करते हुए फिलहाल उमरा व ज़ियारत का प्रोग्राम न बनाएं ताकि कोरोना वायरस की शंकाएं खतम हो जाएं और अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला सऊदी अरब और प्रिय देश भारत सहित पूरी दुनिया को इस तरह की वबाओं और हर तरह की आजमाइशों से सुरक्षित रखे। (आमीन)

(जरीदा तर्जुमान १६-३१ मार्च २०२०)

# एलाने दाखिला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन शनिवार 6 जून से सोमवार 8 जून 2020 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 30 मई 2020 है।

हर क्षात्र को हर महीने वज़ीफा दिया जायेगा।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव

जामिया नगर, ओखला, दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407

Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

**मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द**

## रोज़ा और रमज़ान के महीने की श्रेष्ठता

सुबह फ़ज़्र शुरू होने से पहले शाम को सूरज डूबने तक खाना पीना छोड़ दिया जाये और मर्द औरत का मिलाप न हो, इसका नाम रोज़ा है। इसके अलावा किसी की गीबत चुगली, गाली, झूठी गवाही देना झूठ बोलना किसी पर बुरी नज़र डालना आदि इन बुरी हरकतों से भी रोज़ा में परहेज करना बहुत ही ज़रूरी होता है।

हर महीना की १३वीं १४वीं और १५वीं तारीखों में और जिलहिज्जा महीने के पहले अशरे में और शाबान के महीने में और अगर मुहर्रम की १०वीं तारीख में और सोमवार के दिन और शबवाल में ईदुल फ़ित्र के बाद छः रोज़े रखना, यह सब रोज़े सुन्नत हैं और उनके रखने का बड़ा सवाब है।

मगर रमज़ान का पूरा रोज़ा रखना हर मुसलमान मर्द और औरत के लिये ज़रूरी है। हां

मरीज़ों, मुसाफ़िरों हामिला (गर्भवती) औरतों और दूध पिलाने वाली औरतों के लिये इस महीने में रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है। मुसाफ़िर लोग अपने वतन में पहुंच कर अपने छूटे हुये रोज़े रखें।

बीमार लोग स्वस्थ हो जाने पर रोज़ों को बाद में कज़ा (पूरा) करें गर्भवती (हमल) वाली औरत या दूध पिलाने वाली हर दिन के रोज़ा के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाये या अगर बाद में पूरा (कज़ा) की सूरत हो जाये तो रोज़ा ही रख ले। हाइज़ा औरत भी हैज की हालत में रोज़ा न रखे बाद में कज़ा पूरा करे। ऐसे बूढ़े मर्द और औरत के लिये जो उम्र की आखिरी हद को पहुंच कर सख्त कमज़ोर हो चुके हों और रोज़ा की बिल्कुल ताकत न हो उनके लिये भी रोज़ा मआफ़ है मगर फ़िदया (बदले) में एक मिसकीन को खाना खिलाना ज़रूरी

है। जब रमज़ान का चांद निकलता है तो शैतान कैद कर दिये जाते हैं और जन्नत के सब दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इस महीने में नफ़िल नमाज़ का सवाब फ़र्ज़ के बराबर मिलता है और फ़र्ज़ नमाज़ों का दर्जा इतना बढ़ जाता है कि एक फ़र्ज़ का सवाब सत्तर फ़र्ज़ के बराबर मिलता है। इस महीने में हर नेकी के लिये यही आदेश है इस बुनियाद पर ज़कात का सवाब भी इस महीने में सत्तर गुना ज्यादा होगा।

इस महीने में हमारे प्यारे सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स० अल्लाह की विशेष तौर पर उपासना करते थे इस महीने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरआन मजीद का दौर करते थे इस महीने में जो शख्स अपने सेवक और नोकर के साथ आसानी करेगा अल्लाह तआला उसके गुनाहों को मआफ़ कर

देगा और जहन्नम की आग से उसे आज़ाद कर देगा।

सबसे बड़ा अभाग (बदकिस्मत) शख्स वह है जो अल्लाह को इस रमजान के महीने में खुश न कर सके और नेकियां न कमा सके। इस महीने में जो शख्स अल्लाह की खुशी के लिये रोज़े रखेगा तो अल्लाह के यहां इस का असंख्य सवाब है जिसको लिखने की शक्ति फरिश्तों को भी नहीं है।

एक हदीस में है कि जन्नत

में आठ दरवाज़े हैं उनमें एक दरवाज़े का नाम रैयान है जिस में केवल रोज़ेदार ही प्रवेश करेंगे। रोज़ादार के लिये खुशी के दो वक़्त हैं पहला इफतार का है और दूसरा दिन वह होगा जब अपने रब से मुलाकात करेगा।

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि सन्देष्टा मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया: रोज़ा और कुरआन दोनों बन्दों की सिफारिश करेंगे रोज़ा कहेगा कि ऐ मेरे रब

मैंने इसको दिन में खाने और पीने से रोक दिया था आज बन्दे के बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। कुरआन कहेगा कि मैंने इसको रात में सोने से रोक दिया था और यह रात भर मेरी तिलावत करता था इसलिये इसके बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। हदीस में आता है कि रोज़ा और कुरआन की सिफारिश अल्लाह के यहां मान ली जायेगी। (संकलित)

□□□

## पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अनुरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फ़ोन करें। 011-23273407

# रोज़े के अहकाम और मसाइल

शैखुल हदीस मौलाना अबैदुल्लाह रहमानी रह०

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने रमज़ान के महीने का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब की नियत से रखा तो उसके पिछले पाप मआफ कर दिये जाते हैं (बुखारी १६०१)

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सान जो भी कर्म करता है उस कर्म का बदला उसे दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक मिलता है लेकिन रोज़ा के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि रोज़ा खालिस मेरे लिये होता है इसलिये मैं ही इस का बदला दूंगा रोज़ा रखने वाला केवल मेरे लिये अपनी जिन्सी खुवाहिशात और मेरे लिये खाने पीने को छोड़ता है। रोज़ा रखने वाले के लिये खुशी के दो अवसर हैं एक खुशी उसे इफतार के वक्त हासिल होती है और दूसरी खुशी उसे उस वक्त प्राप्त होगी जब वह अपने पालनहार से मुलाकात करेगा और रोज़ा रखने वाले के मुंह की बू अल्लाह के यहां कस्तूरी खुशबू से ज्यादा पाकीजा है। (बुखारी १८४४ मुस्लिम

१६४)

हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब रमज़ान का आखिरी दस दिन (अशरा) शुरू होता था तो आप स०अ०व० रात के अधिकांश भाग को जाग कर गुज़ारते। अपने परिवार वालों को भी जगाते और इबादत में ज्यादा से ज्यादा मेहनत करते। (मुस्लिम ११७४)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि रमज़ान के महीने में उमरा करना हज करने के बराबर है। (सहीह बुखारी, १७८२, मुस्लिम १२५६)

इसी प्रकार रमज़ान के महीने में सदका खैरात करने का सवाब ज्यादा मिलता है।

## अहकाम व मसाइल

सेहरी खाना सुन्नत है: आप स०अ०व० ने फरमाया अल्लाह और उसके फरिश्ते सेहरी खाने वालों पर सलात, रहमत और दुआ-ए-मगफिरत भेजते हैं (मुसनद अहमद)

सेहरी देर से खाना सुन्नत है। एक रिवायत में है कि आप स०अ०व० फज़ की नमाज़ और

सेहरी खाने में इतना गेप रखते थे कि जिस में आदमी पचास आयत पढ़ सके (बुखारी)

फज़ तुलूअ होते ही खाने पीने से रूक जाये और दिल में नियत कर ले जुवान से अदा करने की ज़रूरत नहीं है बल्कि यह बिदअत अर्थात दीन में नई बात है।

सूरज डूबने का यकीन होते ही इफतार में जल्दी करना मुस्तहब है। आप स०अ०व० ने फरमाया लोग उस वक्त तक खैर पर रहेंगे जब तक इफतार में जल्दी करेंगे। (बुखारी, मुस्लिम)

कुरआन की तिलावत, जिक्र नमाज़ और सदकात ज्यादा से ज्यादा किया जाये। आप स०अ०व० ने फरमाया रमज़ान के महीने में जिक्रे इलाही करने वाले की मगफिरत कर दी जाती है। एक रिवायत में है कि तीन लोगों अर्थात रोजेदार, इन्साफ करने वाले और मजलूम की दुआ रदद नहीं की जाती। (इब्ने खुजैमा, इब्ने हिब्बान)

रोज़े की हालत में क्या करना जायज़ है और क्या करने से



## रोज़ा नहीं टूटता

१. गीली या सूखी मिस्वाक दिन के किसी भी हिस्से में करना
२. सुर्मा लगाना और आंख में दवा डालना
३. सर या बदन में तेल मलना
४. खुशबू लगाना
५. सर पर भीगा कपड़ा रखना
७. इंजेक्शन लगवाना जो कुव्वत और खाने का काम न दे।
८. जरूरत पड़ने पर खाने का नमक चेक करके तुरन्त थूक देना या कुल्ली करना
९. सुबहे सादिक के बाद नहाना
१०. मर्द का बीवी को चुंबन लेना व लिपटना, शर्त है कि मर्द अपने को कन्ट्रोल में रख सकता हो और संभोग का डर न हो।
११. रात में एहतलाम हो जाना
१२. औरत को देख कर इन्जाल अर्थात् वीर्य का बाहर आ जाना।
१३. खुद से उलटी हो जाना चाहे थोड़ा हो या ज्यादा
१४. नाक में पानी डालना बगैर मुबालगा
१६. नाक के रेंठ का अन्दर

- ही अन्दर हलक के रास्ते अन्दर चले जाना
१७. कुल्ली करना शर्त यह है कि मुबालगा न करे।
  १८. कुल्ली करने के बाद मुंह में पानी की तरी का थूक के साथ अन्दर चले जाना।
  १९. मक्खी का हलक में चले जाना।
  २०. इस्तिन्शाक-नाक में (पानी चढ़ाना बिना मुबालगा) की सूरत में बगैर इरादा पानी का नाक से हलक के अन्दर उतर जाना।
  २१. मुंह में जमा थूक पी जाना मगर ऐसा न करना बेहतर है।
  २२. मसूढ़े के खून का थूक के साथ अन्दर चला जाना।
  २३. कुल्ली करते वक्त बिना इरादा पानी का हलक में उतर जाना।
  २४. शर्मगाह में पिचकारी के ज़रिये दवा वगैरह दाखिल करना
  २५. औरत से चुंबन व लिपटने की सूरत में इन्जाल हो जाना
  २६. भूल कर खा पी लेना।
  २७. गर्द गुबार धुवां या आटा उड़ कर हलक में चले जाना।
  २८. मोछों में तेल लगाना

२९. कान में तेल या पानी डालना और सलाई डालना
३०. दांत में अटके हुये गोश्त या खाने का टुकड़ा जो महसूस न हो और विखर कर हलक के अन्दर चला जाये।

## जिन चीजों से रोज़ा टूट जाता है।

१. जान बूझ कर खाना पीना थोड़ा हो या ज्यादा
  २. जान बूझकर संभोग करना
  ३. जान बूझकर उलटी करना थोड़ी हो या ज्यादा
  ४. हुक्का, बीड़ी सिग्रेट पीना,
  ५. पान खाना
  ७. खाना पीना या संभोग करना रात समझ कर या यह ख्याल करके कि सूरज डूब गया है जबकि सुबह हो चुकी थी या सूरज डूबा नहीं था।
  ८. मुंह के अलावा किसी जख्म के रास्ते से नलकी के माधयम से खाना या दवा अन्दर पहुंचाना
- इन सब हालतों में टूटे हुये रोज़ों को पूरा करना जरूरी है और जान बूझ कर बीवी से संभोग कर लेने पर कज़ा के साथ कफ़ारा देना भी जरूरी है।
-

(प्रिस रिलीज़)

## देश में अमन व शान्ति, शिष्टाचार और सांप्रदायिक सदभावना को बहाल रखना हुकूमत व अवाम सब की जिम्मेदारी

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली २५ फरवरी २०२०  
देश विशेषकर दिल्ली में जो हालात घटित हो रहे हैं और अमन व भाई चारा को ख़तम करने की जो कुचेष्टा की जा रही है और खास तौर से कल से राजधानी के विभिन्न एलाकों में जो कुछ हुआ है वह अफसोसनाक है इसके परिप्रेक्ष्य में अर्ज है कि अमन व शान्ति, एकता, और सांप्रदायिक सौहार्द प्रिय पेश की आनबान शान और आपसी मेल जोल और रवादारी गंगा जमुनी सभ्यता व परंपरा की पहचान और प्रतीक है। इसको हर हाल में काइम रखें, समाज के हर वर्ग के लोग आगे बढ़ कर इस पहचान को बाकी रखने के लिये हर तरीके से प्रयास करें, पब्लिक और सरकारी प्रापर्टी को नुकसान न पहुंचने दें, हक व इन्साफ के झण्डावाहक बनें, अमन व कानून किसी भी तौर पर हाथ में न लें, जजबातियत और उत्तेजना से परहेज करें सब्र व संयम और स्थिरता का दामन हाथ से न छूटने दें। यह वक्त का बड़ा तकाज़ा है इन

जजबात और एहसासात का इजहार मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने आज अखबार के नाम जारी एक अमन अपील में किया।

सम्माननीय अमीर ने कहा पिछले कल से दिल्ली के बाज़ एलाकों में बर्बरियत और हिंसक हमलों के जो वाक़आत घटित हो रहे हैं जिनमें कई लोगों की मौतें हुई हैं, दर्जनों जख़मी हुए हैं और सरकार व अवाम की प्रापर्टी बताह व बर्बाद हुई है वह अत्यंत अफसोसनाक और निन्दनीय हैं। क्या अब हमारी प्रापर्टी और जानें राष्ट्रीय राजधानी में भी सुरक्षित नहीं रह गए हैं? देश के संविधान के अनुसार हर शहरी को राय को व्यक्त करने और अपने खिलाफ हुई नाइन्साफी के खिलाफ आवाज़ उठाने और शान्तिपूर्ण मांग व प्रयास करने का हक़ हासिल है। सांप्रदायिक तत्वों के ज़रिए इन शान्तिपूर्ण मांग करने वालों पर हिंसक हमला करना और शान्तिपूर्ण वातावरण में भय, डर और अनारकी फैलाने की कोशिश करना अफसोसनाक और निन्दनीय कृत्य है।

सम्माननीय अमीर ने अपने बयान में सरकार और प्रशासन से मांग की है कि राष्ट्रीय राजधानी सहित पूरे देश में जल्द से जल्द अमन व शान्ति को सुनिश्चित बनाया जाए, असल अपराधियों की पहचान करके अपराध के अनुसार सज़ा दें और अवाम के अन्दर पाए जाने वाले भय व डर को दूर करें, साथ ही उन्होंने साधारण और असाधारण लोगों से अपील की है कि चूंकि इस तरह के हालात में अफवाहों का बाज़ार गरम रहता है इस लिये वह किसी भी तरह की अफवाह पर ध्यान न दें और अपनी कथनी व करनी से सब्र व संयम का प्रदर्शन करें। भड़काऊ बातों से परहेज़ करें और उत्तेजना में न आएँ और ऐसा इक़दाम न करें जिनसे अमन व कानून के दुश्मनों और सांप्रदायिक तत्वों को खेल खेलने का अवसर मिले और हर हाल में देश में इस परंपरागत सांप्रदायिक सदभावना के वातावरण को बहाल रखें। (ज़रीदा तर्जुमान १६-३१ मार्च २०२०)